प्रश्नोरा नागरों के दशपुर आगमन के अन्य विवरण

गतांक से आगे....

मन्दसोर आगमन का दूसरा विवरण- जूनागढ़ से इन प्रश्नोरा नागरों का मन्दसोर में आगमन का दूसरा कारण यवनों का आक्रमण भी बताया जाता है। जिस समय यवनों का गुजरात पर शासन था उस समय इनके अत्याचारों से त्रस्त होकर इन धर्मप्राण हिन्दुओं के यूथ के यूथ गुजरात से चलकर उत्तर की ओर हिन्दू राज्यों में अपने धर्म और प्राण रक्षार्थ जाकर बसने लगे। इसी संदर्भ में प्रश्नोरा नागरों का एक यूथ गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ राज्य के खटयोड़ा आदि नगरों से निकलकर उत्तर की ओर रवाना हुआ। मार्ग में गुजरात प्रान्त के अन्य नगरों से भी प्रश्नोरा नागर इस यूथ में सम्मिलित होते गये। चलते-चलते इस यूथ ने दशपुर नामक नगर में प्रवेश किया। वहां के तत्कालीन राजा ने उनको वहां निवास की आज्ञा दे दी तथा आवश्यक सुविधा की व्यवस्था कर दी। समय पाकर इन नागरों का राज्य शासन में प्रभुत्व बढ़ता गया। राजा के कोई संतान नहीं थी, अतः राजा दशरथ देव के स्वर्गवास के पश्चात इन्होंने राज काज संभालकर अपने राज्य को प्रजातन्त्र घोषित कर दिया। प्रजातन्त्र में इनका बहुमत था इसलिए इन्होंने राज्याध्यक्ष अपनी ही जाति का नियत किया। इनके राज्य की स्थिति सुदृढ़ होने के कारण इन्होंने अपनी प्रश्नोरा नागर जाति का नाम अपने निवासानुसार दशपुरोय "प्रश्नोरा नागर" रख दिया जो बाद में सूक्ष्म रुप में दशोरा हो गया। मन्दसोर आगमन का तीसरा विवरण- प्रश्नोरा नागरों के मन्दसोर आगमन के बारे में एक जनश्रुति और भी है कि एकबार जूनागढ़ के ये ब्राह्मण अयोध्या के राजा दशरथ से मिलने गये। राजा दशरथ इनके पांडित्य से बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने दशोर नगर की एक जागीर दान में देना चाही किन्तु इन ब्राह्मणों ने इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तो राजा ने इनकी विदाई के समय इन्हें पान भेंट किया जिसमें एक हीरा तथा एक दान पत्र रख दिया। जिसमें लिखा था, आपने मेरे घर को पवित्र किया इस वास्ते मैं अपनी भक्ति और श्रद्धा के अनुसार दशोर नामक एक छोटा सा गांव आपके अर्पण करता हूं। जब इन्होंने इस दान पत्र को पढ़ा तो इन्हें बहुत शोक हुआ और बार-बार कहने लगे कि राजा ने हमसे बड़ा कपट किया है। वे इन्हें शाप देने को भी तैयार हो गये किन्तु बाद में ऐसा मानकर कि अनजाने का कोई दोष नहीं है, वे सरयू नदी में स्नान करने चले गये तथा जूनागढ़ लौटने से पूर्व वे इस नदी का पवित्र जल भी साथ में ले गये। जूनागढ़ पहुंच कर वे बान्धवों से मिले तो उनमें बड़ा हर्ष हुआ। इसके बाद इन्होंने अपनी तीर्थ यात्रा का हाल सुनाया और दान-पत्र भी दिखाया और कहा कि हमसे बड़ी भूल हुई है कि हमने भूमि का दान ग्रहण किया है। किन्तु इसमें हमारा दोष नहीं है। राजा ने मुझे छल से यह दान दिया है। अब तुम्हारी क्या राय है सो कहो। इस पर सबने यही कहा कि परमात्मा सब अच्छा ही करता है। तुम निर्दोष हो। जैसे जल के बीच कमल और पत्थर के बीच अग्नि है उसी प्रकार आप हमारे बीच हैं। अपने को दशोरा का राज्य संभाल लेना चाहिए। यह कहकर वे जूनागढ़ से रवाना होकर दशोर में पहुंचे। वहां के राज्य कर्मचारी उसमें हर्षपूर्वक मिले। इन ब्राह्मणों ने अपना दान-पत्र भी दिखाया। इस पर उन कर्मचारियों ने ग्रामवासियों को इकट्ठा किया और उस पत्र को पढ़कर सुनाया तथा दशोर राज्य का सब भेद बताया। राज्य कर्मचारियों ने कहा कि यह दशपुर राज्य दस लाख का है। आप यहां निर्भय होकर राज्य करो। यह कहकर उन्होंने यह राज्य ब्राह्मणों को सौंप दिया तथा वे सब अयोध्या की ओर चल दिये। इन ब्राह्मणों ने चार लाख का परगना अपने कुटुम्ब वालों को दिया तथा अस्सी हजार की जागीर का पट्टा हालूजी हाड़ा को दिया तथा इन्हें अपना रक्षक (सेनापति) नियुक्ति किया। ये दोनों राज्य कार्य देखने लगे। हालू हाड़ा साढ़े तीन सौ पैदल और सौ अश्वपति सेना से नीति-पूर्वक राज्य की सेवा करते थे।

नोट- (यह जनश्रुति कई कारणों से सत्य नहीं मानी जा सकती। संभवतः यह घटना छठी शताब्दी के बाद की है। जिसका सम्बन्ध राजा दशरथ से जोड़ दिया गया हो। दूसरे विवरण में जिस राजा दशरथ देव का नाम आया है वह भी संभवतः यशोधर्म्मन के बाद ही गद्दी पर बैठा हो जिसने यज्ञ कराया हो जिसका सम्बन्ध अयोध्या के राजा दशरथ से जोड़ दिया गया हो। फिर हालूहाड़ा ने बारहवीं शताब्दी के अन्त में दशोरा वंश को बचाया था इसलिए यह प्रथम सेनापति हालूजी हाड़ा न होकर हाड़ा वंश का अन्य कोई व्यक्ति होना चाहिए।)

(-शेष अगले अंक में)

दीपक के दीवाने

लोग दीपक के दीवाने
सिर्फ इसलिये नहीं कि
अंधेरा हटाता है
वरन् इसलिये कि
टिमटिमाते हुए भी
प्रेरणा देता है
संघर्ष की
जलता तो खुद है
आलोकित करता है लोक
जहां तक दृष्टि देख पाती है
प्रशस्त करता है पथ जो लुप्त हो
चुका था
तथा प्राप्त करता है लक्ष्य
आओ दीप वन्दना करें
आगे बढ़ नवसृजन करें
शुभकामना करें।

-व्रजेन्द्र नागर
251 श्री मंगल नगर, इन्दौर